अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष...

महिला सशक्तिकरण

● ब्रह्माकुमारी नेहा, मुंबई (गामदेवी)

समाज के मुख्य अंग पुरुष और महिला हैं। महिलाओं के जीवन में बहुत संघर्ष होता है। दहेज की कुप्रथा, कन्या भ्रूण-हत्या, महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखना आदि-आदि अनेक समस्याओं का महिलाओं को सामना करना पड़ता है। सबसे अधिक महिला सशक्तिकरण शिवबाबा ने किया। शिवबाबा ने महिलाओं को आगे बढ़ाया और दैवी संविधान में लिखवाया कि इस विश्व विद्यालय की मुख्य संचालिका के रूप में सदा ही बहनें रहेंगी और अभी भी बहनों के द्वारा ही आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

स्त्री-धन का कानूनी हक

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रारंभ काल में संस्था में समर्पित बहनों के सामने नारी सुरक्षा से सम्बन्धित अनेक प्रकार की कानूनी बातें आईं। भोली दादी अपनी बेटी मीरा के साथ अपनी माँ के दिये हुए गहने लेकर यज्ञ में आई थी। उनके पति ने कोर्ट में केस दाखिल किया कि स्त्री अपने धन की मालिक नहीं हो सकती इसलिए वह अपने माँ-बाप का धन अपने पति को वापिस करे। कराची कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि स्त्री, स्त्री-धन की पूर्ण मालिक है, उसके इस धन पर पति का कोई हक नहीं है। इस प्रकार नारी को स्त्री-धन का कानूनी हक मिला।

स्त्री अपने शरीर की मालिक

दूसरे कानूनी हक के निमित्त बनी दादी प्रकाशमणि की बड़ी बहन सती दादी। उसके पति ने कहा कि मैं मेरी पत्नी का मालिक हूँ इसलिए उसके साथ हर प्रकार का व्यवहार करने का अधिकार मुझे है। उपभोग के लिए मेरी पत्नी मुझे मना नहीं कर सकती है। इस पर कोर्ट ने फैसला दिया कि प्रत्येक स्त्री अपने शरीर की मालिक है, अगर वह पवित्र रहना चाहती है या विकार में जाना नहीं चाहती है तो वह स्वतंत्र है और उसका पति उसे विकार के लिए बाध्य नहीं कर सकता। इस प्रकार, यह दूसरा कानूनी हक मिला।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए गृह-त्याग की स्वतन्त्रता

तीसरा कानूनी हक यह मिला कि स्त्री अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्वतन्त्र है। कई बहनें अपने परिवार के अत्याचारों के कारण उसे छोड़कर यज्ञ में आई थीं। उनके पतियों ने केस किया कि विवाहिता स्त्री, पति अथवा पति के परिवार की स्वीकृति के बिना घर नहीं छोड़ सकती। परन्तु सार यही रहा कि स्त्री अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपने पति या उसके परिवार की अनुमति के बिना भी घर का त्याग कर सकती है।

यू.एन.तथा यूनेस्को का महिला सशक्तिकरण में योगदान

संयुक्त राष्ट्र (U.N.) व यूनेस्को (UNESCO) द्वारा एक डॉक्यूमेंटरी फिल्म बनायी गई है जिसका नाम है गर्ल्स राइजिंग (Girl Rising)। इस फिल्म का विषय है, शिक्षा द्वारा नारियों में विश्व परिवर्तन करने की ताकत है। विश्व के 9 देशों की लेखिकाओं द्वारा लिखी हुई यह किताब यूनेस्को ने छपवाई है। यू.एन. तथा यूनेस्को भी महिला सशक्तिकरण के लिए सक्रिय हैं। बाबा का यह विश्व विद्यालय यू.एन. एवं यूनेस्को का गैर-सरकारी सदस्य है इसलिए हमारी जिम्मेदारी बनती है कि इस प्रकार के वैश्विक कार्य में अपना पूर्ण सहयोग दें। यू.एन. द्वारा यह भी लिखा गया है कि कन्याओं और माताओं की शिक्षा के ऊपर ज्यादा समय और धन खर्च किया

जाये, तो समाज में, विश्व में गरीबी का जो विषचक्र है वह नष्ट हो सकता है और महिलाओं को सामाजिक न्याय दिलाया जा सकता है। युवतियों की शिक्षा के लिए उन्होंने खास स्लोगन बनाया है, 'बैटर लाइफ बैटर फ्यूचर (Better Life Better Future)'। उन्होंने तय किया है कि महिला सशक्तिकरण के लिए देशों में बहुत प्रचार-प्रसार करना है।

इंग्लैण्ड की संसद में परिवर्तन

समाचार-पत्रों द्वारा मालूम पड़ा है कि इंग्लैण्ड की रूढ़िवादी संसद में भी परिवर्तन हुआ है। इंग्लैण्ड के वर्तमान प्रिन्स विलियम्स की युगल केट मिडलटन ने, जब वे माता बनने वाली थी, घोषणा की थी कि मेरा पहला बच्चा चाहे बेटा हो या बेटी, भविष्य में इंग्लैण्ड की राजगद्दी का वारिस बनेगा। सामान्य नियम यह रहा है कि युवराज ही राजगद्दी का अधिकारी होता है परन्तु अब परिवर्तन हुआ है कि प्रथम जो भी हो, बहन अथवा भाई, वही राजगद्दी का अधिकारी होगा। उन्होंने पुत्र को जन्म दिया पर उनकी उदारवादी घोषणा परिवर्तन का संकेत है। क्या भारत इसका अनुकरण करेगा? भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान की संसद में 342 सीटों में से 60 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं अर्थात् महिलाओं की सुरक्षा हेतु आरक्षण में पाकिस्तान भारत के आगे है।

गणमान्य महिलाओं का नारी-शिक्षा में योगदान

विश्व में अनेक गणमान्य महिलायें, नारी समाज के उत्थान के लिए मेहनत कर रही हैं, जैसे कि एंजोलिना जोली फिल्मों में अभिनय के साथ-साथ नारी उत्थान का कार्य भी कर रही हैं। वे अफगानिस्तान की अशिक्षित महिलाओं की शिक्षा के लिए बहुत खर्च कर रही हैं। काबुल और अफगानिस्तान के अनेक शहरों में नारी शिक्षा के अनेक संकुल उन्होंने खोले हैं। मलाला युसुफजई को भी उन्होंने दो लाख अमेरिकन डॉलर का दान दिया है और उसके द्वारा नारी शिक्षा के लिए भरपूर प्रयत्न कर रही हैं। लोकप्रिय गायिका मैडोना भी महिला शिक्षा के लिए बहुत मेहनत कर रही हैं। वे खुद अपने संगीत के चैरिटी शो द्वारा नारी शिक्षा के लिए धन दान करती हैं। मैडोना ने अपने घर के तीन तैलचित्र बेच कर उनसे प्राप्त हुई धनराशि को नारी उत्थान के कार्य में दिया है। वे मानती हैं कि मैं यह सहन नहीं कर सकती कि नारी अशिक्षित रहे और अपने अज्ञान के कारण अपमानित हो। उनकी मान्यता है कि विश्व की हरेक नारी को शिक्षा द्वारा अपनी उन्नति करने का पूरा अधिकार है और इस अधिकार को सभी पुरुषों को स्वीकार करना चाहिए। ऐसे ही वाशिंगटन की सुप्रसिद्ध महिला केट हडसन ने भी एक कम्पनी की स्थापना की है जिसके द्वारा वे महिलाओं को बिजनेस में तथा अन्य सभी प्रकार के कार्यों में सहयोग देती हैं।

भारत की प्रसिद्ध महिलाओं से अपील

यू.पी.ए. सरकार की अध्यक्षा बहन सोनिया गांधी, लोकसभा अध्यक्षा बहन मीरा कुमार, लोकसभा में विरोधी पक्ष नेता बहन सुषमा स्वराज तथा कई राज्यों की मुख्यमंत्री बहनें भारत की राजनीति में काफी सक्रिय हैं। इन सबसे तथा भारत की पूर्व राष्ट्रपति बहन प्रतिभा पाटिल से मेरी नम्र विनती है कि आप और हम सब मिलकर महिला सशक्तिकरण का कार्य करें। भारत की अन्य प्रसिद्ध महिलाएँ भी इस कार्यक्रम में अपना सहयोग दे सकती हैं। मनुस्मृति में लिखा हुआ है, यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तु रमन्ते तत्र देवा:। अगर हम सब बहनें मिलकर यह प्रयत्न करें तो मनुस्मृति की यह बात सिद्ध हो सकती है।

शिवबाबा ने बताया है कि सतयुग में बहनें विश्व महारानी के रूप में बहुत सुन्दर कारोबार करेंगी। इसलिए पहले श्री राधा का फिर श्री कृष्ण का नाम, पहले श्री लक्ष्मी का फिर श्री नारायण का नाम, पहले श्री सीता का फिर श्री राम का नाम लिया जाता है। ❖